THE GRADUATE SCHOOL COLLEGE FOR WOMEN JAMSHEDPUR

B. Ed DEPARTMENT

SUBJECT :- PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT SOCIAL SCIENCE

(HISTORY)

SEMESTER-II, PAPER-VII A

TOPIC- METHODS OF TEACHING HISTORY

SUB TOPIC- IMPORTANT OF LOCAL HISTORY

Scanned with CamScanner

स्थानीय इतिहास का महत्त्व
(IMPORTANCE OF LOCAL HISTORY)

ई. एल. हस्लक ने स्थानीय इतिहास के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है—"स्थानीय इतिहास का अध्ययन वास्तविक महत्त्व का है। यह उन विभिन्न ऐतिहासिक आन्दोलनों को रोचक एवं विस्तृत ढंग से स्पष्ट करता है, जिन्होंने राष्ट्रीय इतिहास को प्रभावित किया है और स्थानीय परिस्थितियों को सौन्दर्यपूर्ण एवं रोचक बनाया है। यह छात्रों का ऐतिहासिक दृश्यों, नामों तथा भवनों आदि के साथ प्रतिदिन का सम्पर्क स्थापित करके उनके लिए एक रोचक एवं वास्तविक वातावरण का निर्माण करता है। यह छात्रों के विचारों को वर्तमान की ओर से

Scanned with CamScanner

हटाकर उन तथ्यों एवं वस्तुओं की ओर ले जाता है, जो गुजर चुकी हैं अर्थात् उन बातों के विषय में सोचने के लिए तत्पर बनाता है जो बीत चुकी हैं।"

स्थानीय इतिहास के लाभ
(ADVANTAGES OF LOCAL HISTORY)

स्थानीय इतिहास का अर्थ तथा महत्त्व देखने के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि स्थानीय इतिहास से क्या लाभ हैं ? इससे प्राप्त होने वाले लाभ निम्नलिखित हैं—

1. स्थानीय इतिहास द्वारा बालकों में अपनी स्थानीय परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों के प्रति आदर की भावना उत्पन्न की जा सकती है। ये परम्परायें तथा रीति-रिवाज उस स्थान के नैतिक जीवन का प्रतिबिम्ब होती हैं।
2. इसके द्वारा अनुदारता की भावना को दूर किया जा सकता है तथा बालकों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाया जा सकता है।
3. स्थानीय इतिहास अपने पूर्वजों के विषय में परिचय कराता है तथा इसके ज्ञान से हम अपने अतीत का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसके द्वारा बालकों में उस स्थान के प्रति प्रेम एवं भक्ति की भावना उत्पन्न होती है।
4. स्थानीय इतिहास का शिक्षण बालकों में निर्धन मनुष्य के जीवन के प्रति सद्भावना तथा सहानुभूति उत्पन्न करता है और इसके ज्ञान से वे उन समस्याओं को समझने का प्रयत्न करते हैं, जो उनकी निर्धनता का कारण बनी हुई हैं।
5. स्थानीय इतिहास बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करता है।
6. आधुनिक युग में पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाओं पर अधिक बल दिया जा रहा है। परन्तु स्थानीय इतिहास बालकों के विकास के लिए एक नवीन मार्ग की सृष्टि करता है। इसके शिक्षण से उनके चरित्र का निर्माण सुचारू रूप से किया जा सकता है।

इतिहास के पाठ्यक्रम में स्थानीय इतिहास की विषय-सामग्री
(CONTENTS OF LOCAL HISTORY IN HISTORY SYLLABUS)

कुछ विद्वानों का विचार है कि स्थानीय इतिहास पृथक् विषय नहीं होना चाहिए। उन्होंने इसके पक्ष में दो तर्क दिये—**प्रथम**, इसमें पृथक् तथा विस्तृत पाठ्यक्रम बनाना कठिन है। **द्वितीय**, इसमें पाठ्य-पुस्तकों का बहुत अभाव है। इन कारणों को ध्यान में रखकर विद्वानों ने इसके अध्ययन के लिए 'आकस्मिक विधि' को अपनाने के लिए कहा है। जब अध्यापक राष्ट्रीय इतिहास की विवेचना कर रहा हो तो उनको प्रसंगवश स्थानीय तथा क्षेत्रीय (Regional) घटनाओं पर भी प्रकाश डालना चाहिए। इस प्रकार के विवेचन से इतिहास-शिक्षण छात्रों में इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न कर सकता है, क्योंकि बालक अपनी निकटवर्ती तथा पड़ोस की वस्तुओं में अधिक रुचि रखता है और इसके द्वारा राष्ट्रीय इतिहास भी रोचक ढंग से समझ में आ जायेगा। प्रश्न उठता

Scanned with CamScanner

है कि आकस्मिक ढंग से स्थानीय इतिहास के किन तथ्यों का विवेचन किया जाय ? स्थानीय इतिहास की निम्नलिखित विषय-वस्तु का अध्यापन किया जाना चाहिए–

1. उस मुख्य नगर या क्षेत्र का ऐतिहासिक विकास जिसमें विद्यालय स्थित है।
2. उस नगर या क्षेत्र के पास-पड़ोस में घटित हुई वे घटनायें जिनका राष्ट्रीय महत्त्व है।
3. राष्ट्रीय इतिहास के विकास में उस स्थान की देन।
4. स्थानीय परम्परायें एवं रीति-रिवाज, ऐतिहासिक भवन, कला-केन्द्रों आदि से परिचित कराना।

स्थानीय इतिहास के अध्ययन की विधियाँ
(METHODS OF STUDY OF LOCAL HISTORY)

1. स्थानीय स्थानों के निरीक्षण एवं भ्रमण द्वारा स्थानीय इतिहास का अध्ययन किया जा सकता है।
2. स्थानीय समुदायों के संगठन से भी स्थानीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है; जैसे—पुरातत्व सम्बन्धी समुदाय।
3. स्थानीय परिवर्तनों के अध्ययनों से भी स्थानीय इतिहास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
4. व्याख्यान तथा योजना-पद्धतियों के माध्यम से भी स्थानीय इतिहास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इतिहास-शिक्षण का यह कर्त्तव्य है कि स्थानीय इतिहास का उत्तम ढंग से उपयोग करें; जिससे छात्रों में अपने नगर या क्षेत्र के प्रति प्रेम एवं भक्ति उत्पन्न हो सके। परन्तु उनमें यह दृष्टिकोण उत्पन्न न किया जाय कि उनका क्षेत्र ही गौरव प्राप्त करने का अधिकारी है और अन्य क्षेत्र नहीं। ऐसा दृष्टिकोण राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास में बाधक सिद्ध होगा। अतः उसे किसी स्थान के प्रति निष्पक्ष दृष्टिकोण, प्रेम एवं भक्ति उत्पन्न करनी चाहिए। यदि कोई विद्यालय प्राचीन नगर या कस्बे में स्थित है, जो ऐतिहासिक वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है, तो इतिहास-शिक्षक को उन ऐतिहासिक वस्तुओं के विषय में बालकों को प्रत्यक्ष ज्ञान प्रदान करना चाहिए; उदाहरणार्थ—आगरा, देहली, इलाहाबाद, ग्वालियर, अमृतसर, फतेहपुर सीकरी, हैदराबाद आदि स्थानों में स्थित विद्यालयों के इतिहास-शिक्षक स्थानीय ऐतिहासिक वस्तुओं की सहायता से छात्रों को राष्ट्रीय इतिहास का प्रत्यक्ष एवं स्थूल ज्ञान प्रदान करने में समर्थ हैं, अतः उनको इनसे अधिकाधिक लाभ उठाना चाहिए।

Scanned with CamScanner